International Journal of Global Science Research
Vol.1, Issue 2, April 2014, pp. 142-144
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)

Research Article

पर्यावरण और समाज का अनन्य संबंध

अरूणा दुबे
हिन्दी विभाग
शासकीय कालिदास कन्या महाविद्यालय, उज्जैन, भारत

*Corresponding author, Email: aruna0734@gmail.com

Received: 17/07/2014
Revised: 27/07/2014
Accepted: 05/08/2014

सरांषः प्राचीन काल से मनुष्य का पर्यावरण से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। मानव का जन्म ही प्रकृति की गोद में हुआ है। मानव का संपूर्ण विकास पर्यावरण में हुआ है। पर्यावरण से परे हमारा अस्तित्व संभव नही है। हम पर्यावरण में नही जीते बल्कि पर्यावरण से जीते है। अतः पर्यावरण से पृथक किसी भी जीवन की कल्पना करना संभव नही है।

प्रस्तावनाः महाकवि कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के मंगलाचरण में कहा है कि 'प्रत्याक्षाभिः प्रपन्न स्तनु भिरवतु वस्ता भिरष्टाभिरीषः' अर्थात जल, अग्नि, वायु आदि पर्यावरण के तत्वों को ईष्वर का प्रत्यक्ष स्वरूप कहकर अभिनंदित किया है। प्राचीनकाल से ही भारतीय चिन्तन में जीवन और पर्यावरण की परस्पर निर्भरता को महत्वपूर्ण माना है, परन्तु आज वास्तविकता यह है कि हम पर्यावरण से अमृतरूपी रस तो ले लेते है बदले में पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुॅचाते है।

हमारे देष की पवित्र नदियों के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ है कि प्रमुख नदियॉ गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, दामोदर, गोमती, क्षिप्रा का जल विभिन्न उद्योगों एवं नगरों से निकलने वाले अपषिष्ट एवं वाहित जल के कारण प्रदूषित हो रहा है। इसका जल स्वास्थ्य मापदण्डों पर पीने योग्य नही रह गया है। यही कारण है कि भारत में होने वाली दो तिहाई बीमारियॉ प्रदूषित जल के पीने से होती है। एक सर्वेक्षण में पाया गया कि – "अकेले नर्मदा नदी में 54 नगरों की गंदगी मिल रही है"।1 इस तरह से अगर नदियों का पानी प्रदूषित होता रहा तो वह दिन दूर नही जब हम स्वच्छ पानी के लिए तरस जायेगें । आज हम कई तरह से पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे है। उसकी जीवन शक्ति को कम करते जा रहे है। विगत शताब्दी में वृक्षों की अंधाधुंध कटाई के कारण पर्यावरण को जो क्षति पहुॅची है, उसकी पूर्ति होना आवष्यक है।

International Journal of Global Science Research
Vol.1, Issue 2, April 2014, pp. 142-144
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)

वृक्षों के मूल में जल अर्पित करना भारतीय परंपरा में युगों से प्रचलित है। आज भी हिन्दू धर्म में स्नान के उपरान्त पीपल, बरगद, तुलसी आदि पुण्य पौधों–वृक्षों को जल अर्पित करने के उपरान्त ही अन्न जल ग्रहण करते है। रात्रि षयन के पश्चात बिना "मुख प्रक्षालन" किये "बेड टी" ग्रहण करने वालों के लिये यह ढोंग और आडम्बर हो सकता है किन्तु वास्तव में यह नियम पर्यावरण संरक्षण के लिये बड़े महत्व का है। घर में तुलसी, मोहल्ले में पीपल, बरगद का होना इस नियम परंपरा के लिए अपेक्षित है। यह परंपरा पर्यावरण संरक्षण के लिये उपयोगी है प्रासंगिक है। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में शकुन्तला वृक्षों को जल पिलाये बिना जल पीने के इच्छा तक नही करती, आभूषण प्रिय होने पर भी अपने श्रृंगार के लिए एक फूल पत्ती तक नही तोडती । यह स्थिति पर्यावरण निर्माण और पर्यावरण संरक्षण दोनों के लिये संग्रहणीय है।

"पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादते प्रियमण्डनापि भक्तां स्नेहेन या पल्लवम् ।
आद्यो वः कुसुम प्रसुति समये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम ।। "2

पर्यावरण के संरक्षण के लिये उसे क्षति पहूँचाने वालों को दण्डित किये जाने का प्रावधान भी आवष्यक है। कौटिल्य ने अर्थषास्त्र में लिखा है कि –

"पासुन्यासेरभ्यायामष्ट भागो दण्डः। पंकोदक सन्निरोध यदिः।
राजमार्गः द्विगुणः पुण्यस्थानोंदकस्थान देवग्रह राज परिग्रहेषु ।।
पणोन्नराः विष्ण दण्डा, मूत्रोष्वर्धा दण्डाः " 3

पर्यावरण संरक्षण को लेकर प्राचीनकाल से सतर्कता बरती जा रही है परन्तु हमने हर महत्वपूर्ण विचार को नजर अंदाज कर उपभोग की वृत्ति को महत्वपूर्ण माना । यही कारण है कि आज पर्वत, नदी, समुद्र, जंगल मनुष्य की लोभी वृत्ति से अछूते नही रह रहे है। दैनिक भास्कर में प्रकाषित लेख "कष्मीर में बड़े विनाष की चेतावनी " 4 इसी ओर इंगित करता है।

धरती ने हमें विभिन्न पोषण के साधन प्रदान किये है लेकिन धरती के प्रति कृतज्ञता का भाव हम भूल गये है। उनका हम बुरी तरह से दोहन और शोषण कर रहे है। यह कार्य किसी अत्याचार से कम नही है। पिछले वर्ष केदारनाथ में घटित त्रासदी हमारी दोहन नीति का ही परिणाम है। पहाड़ों को काट काटकर जिन मार्गो का निर्माण विकास के नाम पर किया जा रहा है। वह इस तरह की भयावह त्रासदी के लिए जिम्मेदार है। महाराष्ट्र में जिस तरह से गॉव भूस्खनल में दब गया हजारों लोग काल कलवित हो गये यह भी विकास के साथ विनाष की गाथा ही कह रहा है। वर्तमान में विकास का दायरा बढ़ता जा रहा है परन्तु पर्यावरण प्रदूषण मूल्यों को नजर अंदाज किया जा रहा है।

धरती का यह शोषण आज इसकी सहनषीलता से अधिक होता जा रहा है। धरती की उर्वरा शक्ति, जीवन शक्ति पर हमारी नजर लग रही है और हम खुद अपनी विनाष लीला के साक्षी होते जा रहे है। बंकिमचन्द्र चटर्जी की 'सुजलाम्, सुफलाम्, मलयजषीतलाम्' वाली धरती की कल्पना सचमुच ही बडी मनोहारी है । वह जीवनदायिनी स्त्रोतवाहिनी है, पावन है और बिना किसी भेदभाव के सब पर अपना प्यार और स्नेह लुटाती है। लेकिन विडम्बना यह है कि हम धरती की इस कृतज्ञता के बदले उसके प्रति और अधिक कूट व्यवहार कर रहे है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक जार्ज वुडवेल ने कहा है कि " परिवेष के चक्रों के प्रदूषण के बारे में हमने जितना कुछ जाना है, वह इतना पर्याप्त प्रमाण है कि इस विराट धरती पर अब कहीं सुरक्षा और स्वच्छता नही है।

International Journal of Global Science Research
Vol.1, Issue 2, April 2014, pp. 142-144
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)

एक और दुनिया तेजी से विकास कर रही है, जिन्दगी को सजाने के नित नये तरीके ढूंढ रही है, वही दूसरी ओर तेजी से प्रदूषित होती जा रही है। इस प्रदूषण के कारण जीना दूभर होता जा रहा है। आज आसमान जहरीले धुएँ से मरता जा रहा है। नदियों का पानी गंदा होता जा रहा है। सारी जलवायु, वातावरण दूषित हो गया है। इस वातावरण प्रदूषण का वैज्ञानिक नाम "पॉल्यूषन" है।

आज वैज्ञानिक युग में मुनष्य ने अपनी प्रगति पृथ्वी से बहुत दूर विष्व ब्रम्हाड़ तक कर ली है। हम दूसरे ग्रहों तक पहुंच रहे है वहॉ भी जीवन तलाष रहे है। लेकिन इन आकांक्षाओं की पूर्ति के साथ अब समाज में पर्यावरण की रक्षा की चिन्ता भी बलवती होती जा रही है। पर्यावरणविद् चिन्तित है। आज राष्ट्रीय, अर्न्तराष्ट्रीय स्तरों पर पर्यावरण से जुड़े प्रष्नों को लेकर संगोष्ठी कार्यषाला का आयोजन किया जा रहा है। पर्यावरण से जुड़े प्रष्नों को लेकर चिन्ता व्यक्त की जा रही है । आज उद्योग, षिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात आदि क्षेत्रों में हम हर तरह से निरन्तर नई तकनीक से लाभान्वित हो रहे है। षिक्षा के क्षेत्र में स्मार्ट क्लास, ई स्कूल का प्रारंभ हो चुका है। अतः हम नये परिवर्तन और सुविधा का लाभ ले रहे है परन्तु इसके साथ ही हमारी समस्याएँ भी बढ़ रही है अर्थात जीवन के विस्तार और संकीर्णता की गाथा साथ साथ चल रही है। हमारी सोच संतुलन व्यवस्था और नियंत्रण की कुंजी लुप्त हो गयी है। हम स्वार्थी हो गये है। जीवन का उजला पक्ष हमारी दृष्टि से ओझल होता जा रहा है।

आज तकनीकी से उपज रहे कचरे एवं नाभकीय उर्जा प्रक्रम से उपजे इलेक्ट्रानिक वेस्ट को ठिकाने लगाना चुनौती बनता जा रहा है। शायद सभ्यता का पैमाना ही यह होता जा रहा है कि हम कितना कूड़ा पैदा कर रहे है ? पर्यावरण का संकट उपभोक्तावाद की अनोखी सौगात है। इसे सहन करना हमारी नियति बनती जा रही है। वर्तमान में अंतरिक्ष में चक्कर काटते कृत्रिम उपग्रह ही बहुत बड़ी तादात में मौजूद है जो कि अपने आप में ही संकट है।

उपसंहारः पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव मनुष्य जाति पर समान रूप से पडता है। लेकिन फिर भी समाज के सभी वर्गो के लोग मिलकर कदम नही उठाते है। व्यापक दृष्टि से हम देखें तो पर्यावरण को नष्ट करके हम खुद को नष्ट कर रहे है। पर्यावरण संतुलन को बनाये रखना वर्तमान समय की आवष्यकता है, जिसे बनाने में हम सभी को सहयोग देना है। आगे आने वाली पीढ़ी के विषय में हमें सोचना होगा कि हम उन्हे क्या दे रहे है ? संस्कृति प्रधान जीवन होने के कारण हमें वे उपक्रम सोचने होगे जिससे आम आदमी के जीवन की रक्षा हो और पर्यावरण सुरक्षा भी बेहतर हो सके । पर्यावरण संरक्षण के द्वारा ही हम अपने जीवन, उसके अस्तित्व व मनुष्य जीवन की गरिमा की रक्षा कर सकते है।

संदर्भ ग्रंथ

1.दैनिक भास्कर दिनांक 29.08.2014पृ. 1
2.अभिज्ञान शाकुन्तलम् पृ. 13
3.कौटिल्य अर्थषास्त्र पृ. 24
4.दैनिक भास्कर दिनांक 12.09.2014पृ. 8